IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित प्राथमिक अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 श्याम सुन्दर कुशवाहा
सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग
वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)

**सारांश**

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है। न्यादर्श हेतु झाँसी मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों से 200 बी0टी0सी0 एवं 200 विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों को चयनित किया गया। प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि के मापन हेतु डा. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापन स्केल तथा शिक्षण प्रभावशीलता के मापन हेतु डॉ0 प्रमोद कुमार एवं डॉ0 डी0एन0 मूथा द्वारा निर्मित अध्यापक प्रभावशीलता मापनी का प्रयोग किया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के फलस्वरूप पाया गया कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

**मुख्य शब्द :-** प्राथमिक विद्यालय, बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता

## प्रस्तावना

अध्यापक के व्यक्तित्व का बहुत कुछ प्रभाव बालकों के व्यक्तित्व पर पड़ता है। यह बालक ही भविष्य के निर्माता होते है। यदि यह कहा जाए कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण में वहाँ के अध्यापकों का योगदान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी होता है तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगा। इस दृष्टिकोण से किसी भी राष्ट्र के उत्थान समुचित विकास सुयोग्य अध्यापकों की महत्ता स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है।

प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापकों का योगदान सर्वोपरि है। परम्परागत बी0टी0सी0 (बेसिक टीचर सर्टीफिकेट) प्रशिक्षित अध्यापकों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ-साथ 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षित संस्थान' से दो वर्ष का प्रशिक्षण तथा टी0ई0टी0 (टीचर इलिजिबिलीटी टेस्ट) निर्धारित है। जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ-साथ प्रशिक्षित स्नातक (बैचलर ऑफ एजुकेशन) तथा 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान' से 6 माह का प्रशिक्षण तथा टी0ई0टी0 निर्धारित है। परम्परागत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक दो वर्ष के लम्बे प्रशिक्षण अवधि के कारण प्रथमिक शिक्षा के वातावरण में स्वयं को समायोजित कर लेते है तथा प्राथमिक शिक्षा हेतु अपने आप को मानसिक रूप से तैयार कर लेते है। ऐसे अध्यापक प्रशिक्षण के दौरान मानसिक रूप से परिपक्व हो जाते हैं कि उनका शैक्षिक सहयोग प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने में ही रहेगा। ऐसे अध्यापकों की अध्यापक कार्य संतुष्टि, अध्यापक प्रभावशीलता एवं अध्यापक समायोजन का उच्च स्तर होने की पूरी सम्भावनाएं होती है। परन्तु विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ-साथ बी0एड0 तथा टी0ई0टी0 निर्धारित है। विशिष्ट बी0टी0सी0 चयनित अध्यापक अन्य उच्च उपाधि (पी-एच०डी0, नेट) धारक होते हैं जो उच्च शिक्षण संस्थानों या समकक्ष संस्थानों में शिक्षण कार्यों के लिए योग्य होते है। इनको उच्च शिक्षण संस्थानों में शैक्षणिक कार्य हेतु आगे बढ़ने की पूर्ण सम्भावनाएं होती है परन्तु अपने शैक्षिक योग्यता के अनुसार रोजगार न मिल पाने के कारण प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु चयनित हो जाते है। ऐसे अध्यापक दिन रात प्रयास करते रहते हैं कि उनका उच्च व्यावसायिक गतिशीलता हो जाए उच्च आकांक्षाएं रखने वाले अध्यापकों का अपने व्यवसाय में कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का निम्न स्तर होने की पूरी सम्भावना होती है।

शोधकर्ता के मस्तिष्क में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि योग्यता एवं प्रशिक्षण अवधि में अन्तर होने के कारण बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित दोनों प्रकार के अध्यापकों की प्रभावाशीलता में अन्तर होता है। इसी प्रश्नगत बातों को ध्यान में रखते हुए इस शोध समस्या को शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के रूप में चयन किया है।

**सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**

व्यास (2001) ने प्राथमिक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का उनके लिंग, वैवाहिक स्थिति एवं शैक्षिक योग्यता के संदर्भ में अध्ययन में पाया कि विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर होता है। जोशी (2004) ने गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र के बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षक तथा बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया। निष्कर्ष प्राप्त हुए कि बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। समीमा तसनीम (2006) ने बांग्लादेश के प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षिकाओं में कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों में वेतन, योग्यता, व्यावसायिक प्रत्याशा, पर्यवेक्षण, प्रबन्धन, कार्य का परिवेश तथा संस्कृति आदि चिन्हित किये गये। अध्ययनोपरान्त पाया गया कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों में कार्य के प्रति असंतुष्ट है परन्तु पुरूष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षिकायें अधिक असंतुष्ट है।

दिपेश कुमार एण्ड सोन्दरिया (2008) सौराष्ट्र कच्छ के विद्या सहायक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, समायोजन एवं उपलब्ध अभिप्रेरणा पर शोध कार्य किया। अध्ययनोपरान्त परिणाम पाये गये कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अकीरी, आघरूध एवं अन्य (2009) ने नाइजीरिया के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन एवं शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। प्राप्त परिणाम के अनुसार पुरूष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट थी। जिन शिक्षकों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि थी, उनकी कार्य

संतुष्टि निम्न पायी गयी। संगय (2010) ने भूटान के थिम्पू जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर वर्णनात्मक सर्वेक्षण किया। निष्कर्षतः पाया गया कि पूरी तरह कार्य संतुष्टि का स्तर सन्तुष्टप्रद था। विभिन्न आयु, वर्ग, लिंग, शिक्षण अनुभव तथा विद्यालय में वर्तमान स्थिति को सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया जबकि वैवाहिक स्थिति योग्यता विद्यालय का स्तर, शिक्षण, कालांश को सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया।

लतीफ व अन्य (2011) ने पाकिस्तान के फैसलाबाद जिले के सरकारी तथा गैर सरकारी कालेजों के शिक्षकों में कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया और पाया कि सरकारी एवं गैर सरकारी कालेजों की शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। पव्ला (2012) ने पंजाब में व्यावसायिक विद्यालयों के शिक्षकों में कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया। इस अध्ययन से परिणाम प्राप्त हुए कि व्यावसायिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षक की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। गंथुगु, जेम्स एवं हन्नाह (2013) ने केन्या के मोमबासा जिले के माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों की कार्य संतुष्टि का उनके उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्यनोपरान्त पाया गया कि जो प्रधानाचार्य अपने कार्य के प्रति संतुष्ट थे उनकी उपलब्धि अच्छी थी। सिंह, जय प्रकाश (2013) ने उत्तर प्रदेश के स्ववित्तपोषित कालेजों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में सम्बन्ध पर अध्ययन किया। अध्ययनोपरान्त निष्कर्ष पाये गये कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में 0.05 स्तर पर सम्बन्ध सकारात्मक एवं सार्थक पाया गया।

कारनेलियस (2000) ने बी0एड0 छात्राध्यापकों के शिक्षण कुशलताओं पर अध्ययन किया और पाया कि शिक्षक व्यवसाय के प्रति बुद्धि एवं अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि शिक्षकों के विभिन्न समूह में अन्तर के कारक है। कगथला (2004) ने एक अध्ययन में पाया कि विद्यालयों का परिवेश तथा शिक्षकों की उच्च योग्यता शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित करती है। पाल एवं कुमार वेल (2003) ने एक अध्ययन में पाया कि शिक्षकों की शिक्षण अनुभव, समुदाय, प्रबन्धन के प्रकार की दृष्टि से शिक्षण प्रभावशीलता भिन्न होती है अध्ययन में ये भी पाया गया कि ग्रामीण शिक्षक शहरी शिक्षकों की तुलना में अधिक प्रभावशाली है।

जान्सन (2004) ने शिक्षक प्रभावशाली के लिए सहायक कारकों को चिन्हित किया उन्होने ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण किया जो शिक्षकों के लिए अनुकूल सहायक तथा व्यावसायिक संस्कृति विकसित करने वाला हो जिससे नये तथा अनुभवी शिक्षकों में व्यापक स्थायी अन्तःक्रिया हो सके। स्वार्स (2005) ने प्राथमिक स्तर के पूर्व सेवारत उच्च तथा निम्न स्तरीय गणित शिक्षकों की शिक्षण कुशलता का अध्ययन किया। अध्यनोपरान्त पाया गया कि गणित अनुदेशक रणनीतियां तथा गणित विषय से सम्बन्धित पूर्व अनुभव शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करते है।

डिन्ग, कोडी (2006) ने शिक्षक प्रभावशीलता तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन किया। परीक्षण से प्राप्त परिणामों का सीधा सम्बन्ध शिक्षण प्रभावशीलता की गुणवत्ता से पाया गया। वह सम्बन्ध इंगित करता है कि शिक्षक की तैयारी तथा शिक्षक की गुणवत्ता का सम्बन्ध विद्यार्थियों के उपलब्धि से है। हेकर्ट एवं अन्य (2006) ने पाठ्यक्रम अनुदेशक तथा विद्यार्थियों के सम्बन्ध में अध्ययन किया शिक्षण प्रभावशीलता को शिक्षण कौशल, विद्यार्थियों से तादात्म्य कठिनाई की उपयुक्तता तथा पाठ्यक्रम अधिगम जैसे पक्षों से जोड़ा गया। पाठ्यवस्तु की रूचि अपेक्षित ग्रेड, महिला एवं पुरूष, शिक्षण उपलब्धि के सभी पक्षों से सार्थक रूप से सम्बन्धित थे। वांग (2007) ने शिक्षण प्रभावशीलता पर सूचना तकनीकि के प्रभाव का अध्ययन किया। सूचना तकनीकी से अभिप्राय उस प्रक्रिया से है, जिसमें सूचना को चैनल के माध्यम से प्राप्तकर्ता तक पहुँचाया जाता है। जबकि शिक्षण प्रक्रिया में सूचना को शिक्षक द्वारा विद्यार्थी तक

पहुँचाया जाता है। शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार हेतु सूचनाओं के प्रभावशाली स्थानान्तण की तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

**समस्या कथन**

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।

**समस्या में प्रयुक्त पदों की व्याख्या**

चयनित समस्या कथन में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों की व्याख्या निम्नलिखित है-

**प्राथमिक विद्यालय -** प्राथमिक विद्यालय से तार्त्पय उन विद्यालयों से है जिनमें कक्षा 1 से 5 तक की कक्षायें संचालित होती है और ये विद्यालय 'बेसिक शिक्षा परिषद्' के अधीन कार्य करती है। उत्तर प्रदेश सरकार के पुनरीक्षित मानकों के अनुसार 300 या इससे अधिक आबादी की बस्ती में एक प्राथमिक विद्यालय होना चाहिए। दूसरे प्राथमिक विद्यालय की दूरी 1 किमी0 से अधिक नहीं होना चाहिए।

**बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक -** बेसिक टीचर सर्टीफिकेट प्रशिक्षित अध्यापकों के अन्तर्गत वे अध्यापक आते हैं जिनकी न्युनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक तथा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) से दो वर्ष के बी0टी0सी0 प्रमाण पत्र् प्राप्त करते है।

**विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक -** विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक के अन्तर्गत वे अध्यापक आते हैं जिनकी न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ-साथ स्नातक प्रशिक्षण (बी0एड0) हो तथा वे जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) से छः माह का विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त किये हों। प्रशिक्षणोपरान्त प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन कार्य करते हैं। इस श्रेणी के अध्यापकों के पास उच्च डिग्री (नेट, स्लेट, पी-एच0डी0 एवं डि0लिट् इत्यादि ) भी होती है।

**अध्यापक कार्य संतुष्टि -** कार्य संतुष्टि वह आनन्दायक व सकारात्मक अभिवृत्ति है जो कर्मचारी द्वारा अपने कार्य के प्रति व्यक्त की जाती है। ये अभिव्यक्ति कुछ विशेष कारकों जैसे वेतन, कार्य की दशायें, प्रोन्नति का अवसर, समस्या का समाधान तथा लाभांश आदि से सम्बंधित है। कार्य संतुष्टि का अभिप्राय किसी कर्मचारी द्वारा उसके कार्य के प्रति निर्मित सामान्य अभिवृत्ति से है। इसका अनुमान इस आधार पर लगा सकते है कि कोई कर्मचारी अपने परिवेश से पुरस्कार की जो प्रत्याशा रखता है और वस्तुतः जितना प्राप्त होता है दोनों में कितना अन्तर है ? यह एक प्रकार की अभिप्रेरणा है जिसके फलस्वरुप कर्मचारी अपना कार्य सम्पादित करने में असीम आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है। यह कार्य संतुष्टि व्यैक्तिक स्तर पर अनुभूति किया जाता है और किसी भी रुप में इसकी सामूहिक व्याख्या नहीं की जा सकती है।

**अध्यापक शिक्षण प्रभावशीलता -** अध्ययन की प्रभावशीलता का अर्थ अध्यापकों तथा विद्यालयों के साथ सम्बन्धों शिक्षण कार्यों एवं कक्षा-कक्ष शिक्षण के परिणाम की गुणवत्ता से होता है। अध्यापकों के प्रभावशीलता का मापन उन छात्रं के परिणाम से होता है जिनको वह पढ़ाता है। प्रभावशाली अध्यापक वे होते है जो विद्यार्थियों को बुनियादी कौशलों, अवबोध, उचित कार्य, आदतों, वांछनीय अभिवृत्तियो, मूल्यों, निर्णयों एवं समुचित व्यक्तिगत समायोजन के विकास में सहायता प्रदान करते है। अध्यापक प्रभावशीलता मापनी पर सहकर्मी अध्यापको, प्रधानाचार्य तथा अभिभावकों के आधार पर प्राप्त अंकों के योग को अध्यापक प्रभावशीलता के रूप में ग्रहण किया गया है।

## उद्देश्य

1. बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## परिकल्पना

1. बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं है।
2. बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अन्तर नहीं है।

## प्रतिदर्श

शोध के सन्दर्भ में प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिदर्श चयन के निमित्त बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का अनुसरण किया गया। प्रथम स्तर पर यादृच्छिक चयन विधि द्वारा झाँसी मण्डल के प्राथमिक स्तर के विद्यालय चयनित किये गये। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों में से 200 बी0टी0सी0 एवं 200 विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों तथा उनकी संख्या को तालिका में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका – 1 निर्धारित प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों का वितरण

| क्र.सं. | समूह | महिला | पुरूष | योग |
|---|---|---|---|---|
| 1 | बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक | 100 | 100 | 200 |
| 2 | विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक | 100 | 100 | 200 |
| | योग | 200 | 200 | 400 |

## उपकरण

1. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि के मापन हेतु डा. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापन स्केल का प्रयोग किया गया है।
2. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मापन हेतु डॉ0 प्रमोद कुमार तथा डॉ0 डी0एन0 मूथा द्वारा निर्मित- अध्यापक प्रभावशीलता मापनी का प्रयोग किया गया है।

## सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध से सम्बन्धित एकत्रित प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन व टी- परीक्षण का प्रयोग किया गया।

## परिणाम तथा विवेचन

बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करने हेतु कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता मापनी से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक-विचलन तथा विभिन्न वर्गों के

मध्य मध्यमानों के अन्तर की सत्यता ज्ञात करने के लिये टी-मान की गणना की गयी, जिसे तालिका संख्या- 2 एवं 3 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका – 2

बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि के सांख्यिकीय मानों का परिदृश्य

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-अनुपात | स्वतन्त्रा श | सार्थक ता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक | 200 | 211.27 | 23.589 | 3.051 | 398 | 0.000* |
| बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक | 200 | 204.305 | 22.07 | | | |
| *'01 स्तर पर सार्थक | | | | | | |

तालिका – 3

बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के शिक्षण प्रभावशीलता के सांख्यिकीय मानों का परिदृश्य

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-अनुपात | स्वतन्त्रा श | सार्थक ता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक | 200 | 296.38 | 41.287 | 3.776 | 398 | 0.000* |
| विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक | 200 | 303.66 | 33.879 | | | |
| *'01 स्तर पर सार्थक | | | | | | |

तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित मध्यमानों के मान से बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि उच्च स्तर की परिलक्षित हो रही है, अर्थात बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक अपने कार्य के प्रति संतुष्ट हैं । वही मानक विचनल का निम्न मान समूह में निम्न विचलनशीलता अर्थात समूह में समजातीय को प्रदर्शित करता है। तालिका-2 में प्रदर्शित बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर की सत्यता ज्ञात करने के लिये सांख्यिकीय दृष्टि से .01 स्तर पर सार्थक टी-मान (3.051) इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पना को अस्वीकृत करता हैं अर्थात् बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना "बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं है" अस्वीकृत होती है।

तालिका संख्या 3 में प्रदर्शित मध्यमानों के मान से बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता उच्च स्तर की परिलक्षित हो रही है, अर्थात बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक अपने कार्य में प्रभावशील हैं । वही मानक विचनल का निम्न मान समूह में निम्न विचलनशीलता अर्थात समूह में समजातीय को प्रदर्शित करता है। तालिका-3 में प्रदर्शित बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापक के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर की सत्यता ज्ञात करने के लिये सांख्यिकीय दृष्टि से .01 स्तर पर सार्थक टी-मान (3.776) इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पना को अस्वीकृत करता हैं अर्थात् बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना "बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के शिक्षण प्रभावशीलता में अन्तर नहीं है" अस्वीकृत होती है।

## निष्कर्ष

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों से अधिक होती है।
2. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता, बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों से अधिक होती है।

## शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं -

1- शिक्षण-प्रशिक्षण में अध्यापन कार्य कर रहे अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण और प्रयास से अध्यापकों में कार्य संतुष्टि के संदर्भ में दृष्टि दिया जा सकता है। अध्यापकों को नौकरी के पहले या नौकरी के दौरान यह प्रशिक्षण अध्यापकों को लाभ पहुँचायेगी।

2- प्रशिक्षण संस्थायें प्रशिक्षु अध्यापक का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को ध्यान में रखते हुए उनका प्रवेश ले। प्रशिक्षण संस्थायें कक्षाध्यापकों को कार्य सतुष्टि, प्रभावशाली शिक्षण एवं अध्यापन समायोजन के लिए प्रशिक्षण दे सकती हैं, जो शिक्षण कार्य करते समय एक प्रशिक्षु अध्यापक के लिए अच्छा होगा।

3- यह शोध पर्यवेक्षकों एवं प्रशासन के लिए बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बीटी0सी0 अध्यापकों के उनके प्रमोशन, वेतन-भत्ता और अन्य भत्ता, स्कूल के वातावरण में सुधार कर, पुस्तकालय और अन्य ऐसे व्यवस्था को सुधार कर अध्यापकों के कार्य संतुष्टि को कैसे अच्छा किया जाय, पर्यवेक्षकों एवं प्रशासन को इसके लिए सहायता मिलेगी।

4- एक निर्देशनकर्ता को बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के असंतोष एवं कुसमायोजन की समस्या के लिए इस शोध के द्वारा उनको विश्लेषण करने का अवसर मिलेगा। एक परामर्शकर्ता को इस शोध के द्वारा प्राथमिक अध्यापकों के समस्या के विश्लेषण के बाद उनमें कार्य संतुष्टि को कैसे बढ़ाया जाय, का परामर्श देने में सहायता मिलेगी।

5- इस शोध का परिणाम नीति निर्माताओं को योजना बनाते समय बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के बीच दूरी को समाप्त करने तथा इन दोनों के द्वारा स्वास्थ्य, विद्यालयी वातावरण तथा सामंजस्य बनाने में नीति निर्धारण करते समय सहायता मिलेगी।

6- प्रधानाचार्य को अध्यापकों के व्यवहार का अवलोकन करते रहने तथा उनमें कैसे शिक्षण के प्रति उत्साह एवं उनमें कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता तथा समायोजन बढ़े उनको इसके बारे में सोचते रहना चाहिए। इस कार्य में सहायता प्रदान करेगी।

## संन्दर्भ सूची


व्यास, एम0वी0 (2001). द जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ प्राइमरी टीचर्स विथ रिफ्रेन्स टु द सेक्स, मेरिटल स्टेट्स एण्ड एजुकेशनल क्वालिफिकेशन, पी-एच0डी0 एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट

जोशी, हरीका एल0 (2004). ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ जॉब स्ट्रेस, जॉब इनवाल्वमेन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ बी0एड0 टीचिंग एण्ड बी0एड0 टैªन्ड टीचर्स ऑफ राजकोट सौराष्ट्र रीजन ऑफ गुजरात स्टेट, पी-एच0डी0 एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट

समीमा तसनीम (2006). जॉब सेटिसफेक्शन अमांग फिमेल टीचर्स: ए स्टडी ऑफ प्राइमरी स्कूल्स इन बांग्लादेश, अनपब्लिश्ड एम0फिल0 थेसीस, बरजेन यूनिवर्सिटी

दिपेश कुमार डी0 एण्ड सोन्दरिया (2008). ए स्टडी ऑफ एचिवमेन्ट मोटिवेशन एडजस्टमेन्ट एण्ड सेटीसफेक्शन ऑफ प्राइमरी विद्यालय टीचर्स ऑफ सौराष्ट्र, पी-एच0डी0 एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट

अकीरी, आघरूध एवं अन्य (2009) एनालिटिकल एक्जामिनेशन ऑफ टीचर्स कैरियर सेटिस्फेक्शन इन पब्लिक सेकण्ड्री स्कूल, एस0टी0डी0यू0 होम कामर्स, साइंस 3(1) पृ0-51-66

दुर्कया संगय (2010). जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ सेकण्ड्री स्कूल टीचर्स इन थिम्पू डिस्टिक्ट ऑफ भूटान, एम0एड0 एजुकेशन, माहिडोल यूनिवर्सिटी, भूटान

लतीफ व अन्य (2011). जॉब सेटिस्फेक्शन अमांग पब्लिक एण्ड प्राइवेट कालेज टीचर्स ऑफ डिस्ट्रिक्ट फैसलाबाद, पाकिस्तान: ए काम्परेटिव एनालिसीस इन्टर डिसिप्लिनरी, जर्नल ऑफ कंटेम्पररी रिसर्च इन बिजनेस, वाल्यूम 3(8) दिसम्बर 2010

पव्ला (2012). ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन अमांग टीचर्स ऑफ प्रोफेशनल कालेज इन पंजाब, इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वाल्यूम 10 (2012), अक्टूबर 2012

जेम्स एण्ड हन्नाह डब्लू0 वचिरा (2013). जॉब सेटिस्फेक्शन फैक्टर्स दैट इनफ्लूएन्स द परफारमेन्स ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल प्रिंसिपल्स इन देयर एडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शन इन मोमबासा डिस्ट्रिक्ट केन्या, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च , फरवरी 2013

सिंह, जयप्रकाश (2013) रिलेशनशिप बिट्वीन टीचिंग कॉम्पीटेंस एण्ड सेटिस्फेक्श्न: ए स्टडी एमांग टीचर एजुकेटर्स वर्किंग इन सेल्फ फाइनेसिंग कालेज इन उत्तर प्रदेश इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च , 2013

कारनेलियस (2000). टीचर कम्पिटेन्स एसोसिएटेड विद इंटेलिजेंस एटीट्यूड टू वर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन एण्ड एकेडमिक अचिवमेन्ट ऑफ टीचर ट्रेनिंग, अनपब्लिश्ड एम0फिल0 थेसिस, यूनिवर्सिटी ऑफ केरला।

कगथला, ए0बी0 (2002). ए स्टटी ऑफ इफेक्टिवनेस ऑफ टीचर्स ऑफ सेकण्ड्री इन गुजरात, जर्नल एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजी, एलआई.एक्स.-31, एण्ड वैल्युम-एल.एक्स., नम्बर (1), पृ0 26-33।

पाल, वी0डी0 एण्ड कुमारवेल के0 (2003), टीचर इफेक्टिवनेस एन एम्पिरियल स्टडी ऑफ एलिमेन्टरी स्कूल टीचर्स इक्सपेरिमेन्ट्स इन एजुकेशन एक्स.एक्स.एक्स.आई., पृ0 200-201

जान्सन, एस0एम0 (2004), द प्रोजेक्ट ऑन द नेक्स्ट जनरेशन ऑफ टीचर्स फाइन्ड्स एण्ड कीपर्स: हेल्पिंग न्यू टीचर सरवाइव एण्ड थ्राइव इन आवर स्कूल, सेन फ्रेंसिस्कोः जासी-बास।

स्वार्स, सुसंजी (2005), एग्जामिंग पर्सेप्न ऑफ मैथमेटिक्स टीचिंग अफेक्टिवनेस अमांग एलिमेंट्री प्रिसर्विस टीचर विद डिफरिंग लेवल ऑफ मैथमेटिक्स टीचर एफिसिएंसी, जर्नल ऑफ इंस्ट्रक्शनल साइकोलॉजी, 32, पी0 139-147।

यू0टी0वाई0, रॉबर्ट (2005), रिलेशनशिप बिटवीन टीचर्स टीचिंग इफेक्टिवनेस एण्ड स्कूल इफेक्टिवनेस इन कॉम्प्रेहेन्सीव हाई स्कूल इन ताइवान रिपब्लिक ऑफ चाइना, 2005 इ0आर0आई0सी0 आन लाइन सब्मिशन पेपर प्रजेन्टेड एट द इंटरनेशनल कांग्रेस।

डिन्ग, कोडी (2006), टीचिंग इफेक्टिवनेस एण्ड स्टुडेन्ट अचीवमेंट इक्जामिंग द रिलेशनशिप एजुकेशनल रिसर्च क्वार्टर्ली 29, पी0 40-51।

हेकर्ट, टेरिसा एण्ड अदर (2006), रिलेशन ऑफ कोर्स इंस्ट्रक्टर्स एण्ड स्टूडंट करेक्टरिस्टिक्स टु डाइमेशन ऑफ स्टुडेन्ट रेटिंग ऑफ टीचिंग इफेक्टिवनेस, 2006 (इ0जे0 765314) कोलज स्टुडेन्ट जर्नल, 40, पृ0 195-203।

वांग, झी-जुव (2007), इम्पैक्ट ऑफ इन्फारमेशन इन्ट्रापी ऑन इफेक्टिनेस, इ0आर0आई0सी0, 2007।